वर्ष-2; अंक- 11 नवंबर 2018 आर.एन.आई. पंजीकरण क्रमांक
जे-7 श्रीरामनगर, रायपुर (छ.ग.) CHHHIN/2017/72506

किलोल

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा , शेख अजहरुद्दीन

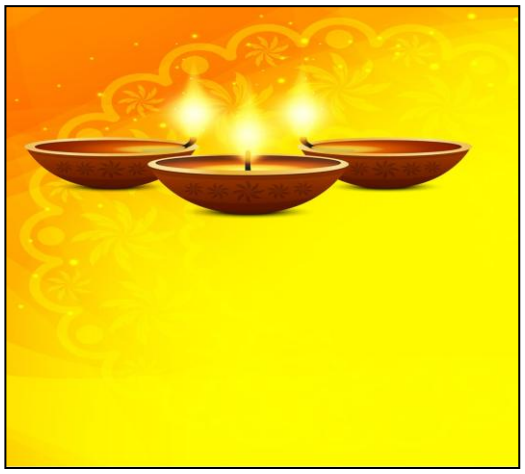

प्यारे बच्चों,

यह त्योहारों का मौसम है. कुछ समय पहले आपने नवरात्रि और दशहरे का त्योहार मनाया था. यह बुराई पर अच्छाई की जीत का त्योहार है. अब कुछ ही दिन में दीवाली का त्योहार आने वाला है. इस दिन आप सब अपने घरों को दियों से सजाएंगे. दीवाली के दिन लक्ष्मी अर्थात् धन की पूजा होती है. पुराने समय में वणिक वर्ग के लोग दीवाली से ही नया खाता बही भी शुरू करते थे, अर्थात् दीवाली से हमारे देश में नया वित्तीय वर्ष भी शुरू होता था. दीवाली में फटाके भी चलाए जाते हैं. फटाके चलाते समय सावधानी रखना ज़रूरी है. कभी-कभी असावधानी से दुर्घटना भी हो सकती है.

किलोल को आपका प्यार सदा ऐसे ही मिलता रहे और आप न केवल किलोल पढ़ते रहें बल्कि उसके लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि भेजते रहें. हम इसे बच्चों की सबसे प्यारी पत्रिका बनाने के लिए संकल्पित हैं. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

ईंट का जवाब पत्थर

लेखक - हरिश जायसवाल

पाली तालुका के बोईदा गांव में एक घटना हुई. एक बार एक गरीब किसान ने किसी अमित सेठ से एक कुआं खरीदा. पर जब वह कुएं से पानी भरने गया तो सेठ के आदमी ने उसे पानी लेने नहीं दिया. उसने कहा - "मैंने सिर्फ कुआं बेचा है, पानी नहीं. यदि पानी चाहिए तो कुछ और पैसे देने होंगे." उस आदमी और किसान के बीच झगड़ा हो गया.

दोनों झगड़ा सुलझाने के लिए गांव के जायसवाल गुरूजी के पास गये. दोनों पक्षों की बात सुनने के बाद गुरूजी ने अमित सेठ से कहा - "क्योंकि तुमने अपना कुआं बेच दिया है इसलिए तुम अपना पानी अब उस कुएं में नहीं रख सकते. या तो अपना पानी उसमें से बाहर निकाल लो या कुएं में पानी रखने का किराया किसान को दो."

अमित सेठ को समझ में आ गया कि उससे भी अधिक बुध्दिमान लोग संसार में हैं. उसने झुककर गुरूजी को नमस्कार किया और वहां से बाहर चला गया. गरीब किसान मन में बोला - "यह रहा ईंट का जवाब पत्थर."

उद्दण्ड लल्लू

लेखक - दीपक कंवर

एक गांव मे लल्लू नाम लड़का रहता था. वह दिनभर इधर-उधर घूमता और किसी न किसी से लड़ाई-झगड़ा करता रहता था, जिसकी शिकायत सब उसके घर तक रहते थे. इससे उसके माता-पिता भी बहुत परेशान रहा करते थे. उन्होने समझाने की बहुत कोशिश की पर लल्लू मानता ही नहीं था. इसी कारण उसके दोस्त भी नहीं थे.

एक दिन वह अपने नयी सायकल पर गांव की गलियों मे घूम रहा था. बीच रास्ते मे दो बैल लड़ रहे थे. उनसे बचने के लिए जैसे ही लल्लू किनारे पर आया, वह सायकल सहित बड़े से गड्ढे मे गिर गया. उसके हाथ पैर मे चोट लगी. वह दर्द के कारण अम्मा-बाबूजी कहकर चिल्लाने लगा. उसी रास्ते मे दो-तीन लड़के गुज़र रहे थे. लल्लू को गड्ढे में गिरा देखकर एक लडका बोला - "अच्छा हुआ यह गिर गया. बहुत झगड़ा करता है." दूसरा लड़का भी बोला - "अब पता चलेगा परेशानी क्या होती है. इसे नहीं उठायेंगे." तभी तीसरा लड़का समझाते हुए कहने लगा - "नहीं यार कुछ भी हो बेचारा छटपटा रहा है. झगड़ालू है तो क्या हुआ, इंसान तो है. कम

से कम हमे उसके जैसा नहीं होना चाहिए. हमे उसकी मदद करना चाहिए.'' सभी ने तीसरे लड़के की बात मान ली और सहारा देकर लल्लू को बाहर निकाल और उसके घर पहुंचा दिया.

पलंग पर लेटे हुए लल्लू अब सोचने लगा - ''मै कितना उन लड़कों से झगड़ा किया करता था. फिर भी उन्होने मेरी मदद की. अगर वो मेरी मदद नहीं करते तो मेरा क्या हाल होता.'' यह सोच कर लल्लू पश्चाताप करने लगा. उसने तय किया कि अब से किसी को झगड़ा नहीं करेगा. उसके बाद वह सभी से अच्छा व्यवहार करने लगा. उसके इस बदले हुए व्यवहार से माता-पिता भी बहुत खुश थे. अब लल्लु उदण्ड की जगह सीधा-सादा हो गया था.

प्रिय सहेली

लेखक - दीपक कंवर

गांव मे एक गरीब कुम्हार परिवार रहता था. वो मिट्टी के बर्तन, दिया, मूर्ति, खिलौने बनाते थे और उसे बेचकर अपना जीवन यापन करते थे. उस परिवार में एक छोटी सी लड़की थी जिसका नाम सीता था. वह भी खिलौने बनाना सीख गई थी. वह जो भी जानवर, पक्षी आदि देखती, वैसे ही खूबसूरत खिलौने बना लेती. उसके पास हाथी, घोड़ा बकरी, गाय, कुत्ता, बिल्ली, चूहा और बहुत सारे पक्षियों के खिलौने हो गये थे. इन्हें वह अपने घर मे सजाकर रखती थी.

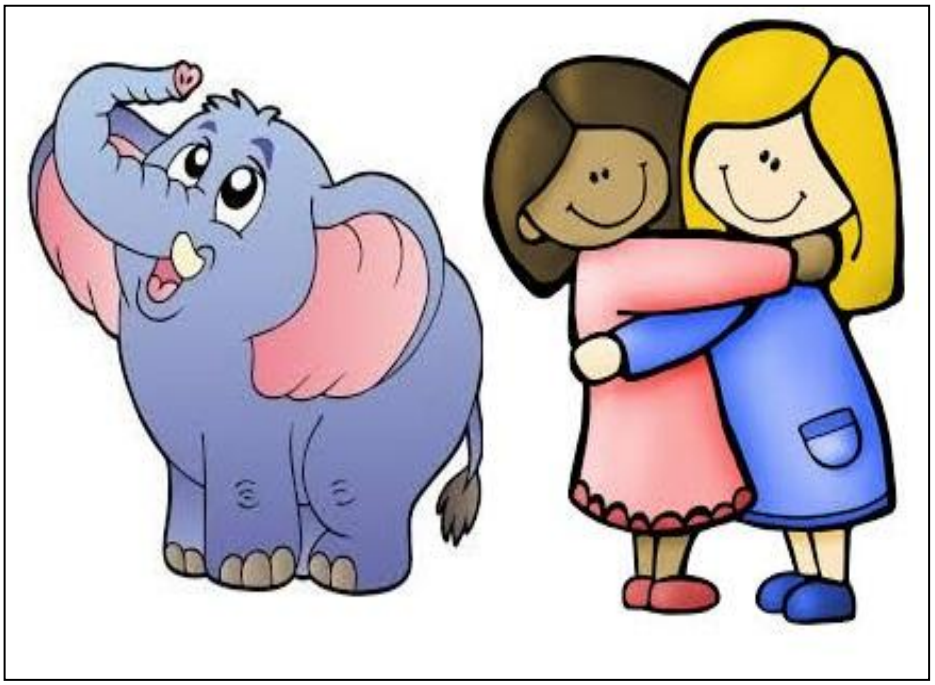

स्कूल मे उसकी प्रिय सहेली रूपा थी. आज रूपा का जन्मदिन था. उसने सीता को आमंत्रित करते हुए कहा था कि जब तक सीता उसके घर नहीं आयेगी जब तक वह केक नहीं काटेगी. सीता दिन भर असमंजस मे थी कि उसके घर क्या उपहार लेकर जाये. अच्छे तोहफे लेने के लिए उसके पास पैसे नहीं थे. उसके पास नए कपड़े भी नहीं थे. शाम का वक्त हो चला था. सीता अपने पुराने कपड़े ही पहनकर और अपने सबसे प्रिय हाथी के खिलौने को लेकर अपनी सहेली के घर की ओर चल पड़ी.

घर के दरवाजे के बाहर खड़े होकर उसने सकुचाते हुए देखा. घर रंग बिरंगे फूलों व लाइटों से सजा हुआ था. दूसरे मेहमान बढ़िया-बढ़िया कपड़े पहने हुए थे और सुंदर-सुंदर तोहफे लाए थे. यह सब देखकर सीता शर्मा गई और उसने हाथी का खिलौना छुपा कर रख लिया. तभी रूपा की नजर सीता पर पड़ी. वह बहुत देर से सीता का इंतज़ार कर रही थी. रूपा उसे अंदर ले आई. फिर उसने पूछा - ''मेरी सहेली आज मेरे जन्मदिन पर क्या लाई है?'' ऐसा सुनकर सीता की आंखें भर आईं और झिझकते हुए उसने मिट्टी का हाथी आगे बढ़ा दिया.

हाथी का खिलौना देखकर रूपा ने बहुत ही खुश हुई. उसने रूपा को गले से लगा लिया और कहा - ''मेरी सहेली के हाथों से बना हुआ तोहफा मेरे लिए अनमोल है. मै इसे हमेशा संभालकर रखूंगी.'' उसकी आंखों मे खुशी के आंसु आ गए. फिर दोनो ने मिलकर केक काटा और बहुत धूमधाम से जन्मदिन मनाया.

<u>सुखी व दुखी की दोस्ती</u>

लेखिका - दीप्ति दीक्षित

दो लड़के थे. एक का नाम सुखी और दूसरे का नाम दुखी था. दोनों ही अपने नाम के बिल्कुल विपरीत थे. दुखी पढ़ाई लिखाई और अन्य कार्यों में बहुत तेज था व हमेशा प्रसन्न रहता था. विद्यालय में सभी शिक्षकों का वह प्रिय था. परन्तु सुखी हमेशा शैतानी करता था व कभी भी पढ़ाई और अपने भविष्य के बारे मे न सोचते हुए बदमाशियों में ही लगा रहता था.

दुखी हमेशा उसे समझाता व सही राह पर लाने की कोशिश करता पर कभी कोई फायदा न होता. विद्यालय के शिक्षक भी उससे परेशान थे. सुखी को हमेशा दुखी से ईर्ष्या होती थी क्योंकि सब लोग दुखी को पसंद करते थे और उसी की तारीफ करते थे. एक बार सुखी ने अपने पुराने खिलौनो से एक बहुत ही अच्छा विज्ञान का मॉडल बनाया. उसने दुखी को भी माडल दिखाया. दुखी ने उसकी बहुत प्रशंसा

की और अपने शिक्षकों को सुखी के व्दारा बनाया वह मॉडल दिखाया. सभी ने उसकी बहुत प्रसंशा की. सूखी को यह बहुत अच्छा लगा. इसके बाद वह नित नये प्रयोग करने लगा और अपने शिक्षकों का चहेता बन गया. पढ़ाई के प्रति भी उसकी रुचि जागृत हो गई. अब वह बिना शैतानी किए बहुत अच्छे से पढ़ाई व सभी कार्य करने लगा. इससे उसके माता पिता भी बहुत प्रसन्न हुए. बड़ा होकर वह एक वैज्ञानिक बना, तथा उसने बहुत से आविष्कार भी किये.

सफलता

संकलनकर्ता - कु. प्रीति बंसल

नितीश एक गॉव का पला बढ़ा इंसान था. मन में आगे बढ़ने की उमंग थी. कुछ अच्छा करने का उत्साह था. वह घर वालों से जिद करके पढाई के लिए शहर चला गया. नितीश शुरुआत से ही अव्वल दर्जे का छात्र रहा था. कालेज से भी वह अच्छे नंबरों से पास हुआ. एक अच्छी कंपनी में नौकरी भी मिल गयी थी. करीब 4-5 साल बाद नितीश गॉव लौटा तो उसने देखा आज भी लोगों में वही प्यार और स्नेह की भावना थी. गॉव के लोग नितीश को इंजिनियर बाबू कहकर बुलाते थे. यह सुनकर नितीश मन में सम्मान महसूस करता था.

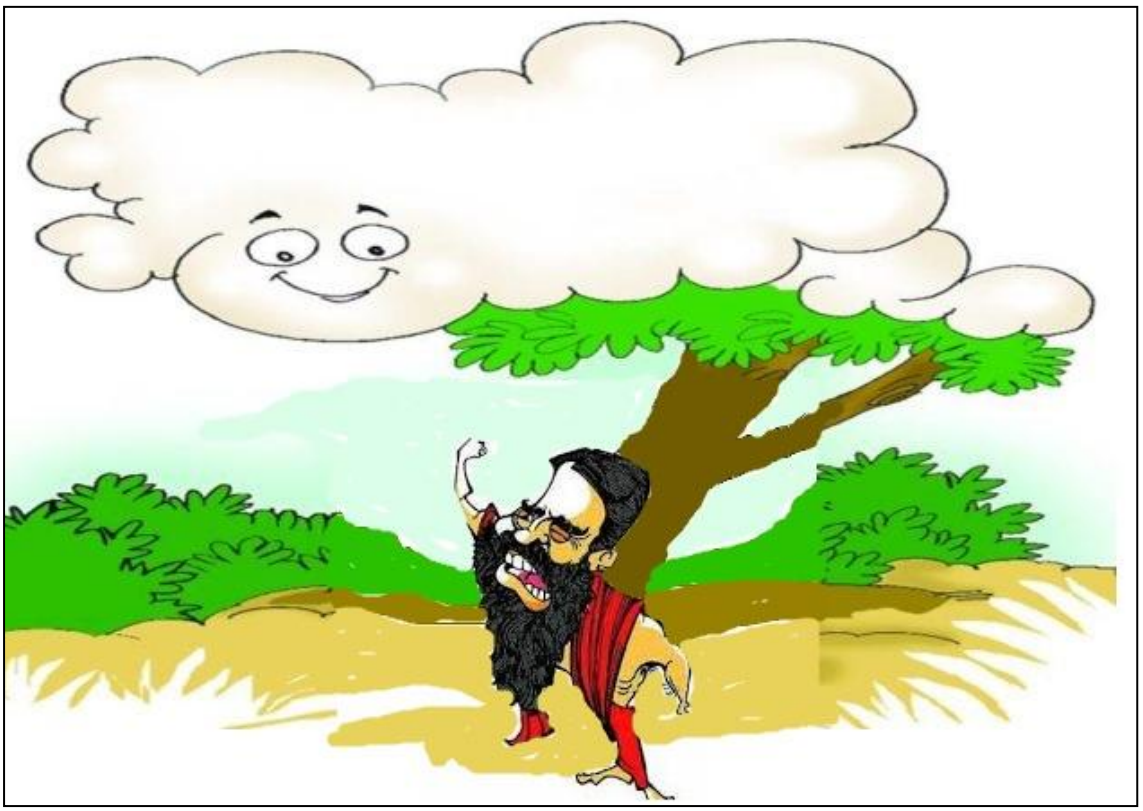

एक दिन किसी ने नितीश को बताया कि गॉव में एक साधू बाबा आये हैं. वो जब भी नाचते हैं बारिश होने लगती है. यह सुनकर नितीश को बड़ा आश्चर्य हुआ. नितीश विज्ञान का छात्र था और वो जानता था कि ऐसा कोई जादू संभव ही नहीं है. उसे लगा कि बाबा भोले गॉव वालों को बेवकूफ बना रहा है. यही सोचकर वह बाबा से मिलने गया. नितीश ने जाकर बाबा को चेलेंज कर दिया कि आपके पास कोई जादू नहीं है. अगर आपके नाचने से बारिश हो सकती है तो मेरे नाचने से भी ज़रूर होगी. गॉव वाले भी देखने के लिए इकट्ठा हो गए. नितीश ने नाचना शुरू किया. नाचते हुए बार बार आसमान की ओर देखता लेकिन बारिश नहीं हुई. नितीश थोड़ी देर में ही थक गया. अब बाबा की बारी थी. बाबा ने नाचना शुरू किया, और घंटों नाचते ही रहे. बहुत देर तक बारिश नहीं हुई. बाबा भी लगातार नाचे जा रहा था. काफी देर बाद आसमान में बादल छाने लगे. बाबा नाचते हुए थका नहीं बल्कि घंटो नाचता रहा. कुछ देर बाद बादल जमकर बरसे. घनघोर बारिश हुई. नितीश ने सर झुकाकर बाबा से इस जादू के बारे में पूछा. बाबा ने कहा- "बेटा ये कोई जादू नहीं है. न ही ये कोई कला है. ये तो बस एक दृढ़ निश्चय है. मैं जब भी नाचता हूँ तो दो बात का ध्यान रखता हूँ. पहली बात मैं मन में खुद को विश्वास दिलाता हूँ कि अगर मैं नाचूंगा तो बारिश जरूर होगी. और दूसरी बात कि अगर बारिश नहीं हुई तो मैं तब तक नाचूंगा, जब तक बारिश ना हो जाये. बस यही मेरी सफलता का राज़ है.

कहानी की नैतिक शिक्षा - जब किसी नए काम की शुरुआत करें तो खुद पर विश्वास रखें कि आप सफल ज़रूर होंगे. और तब तक प्रयास करते रहें जब तक सफल न हो जायें. यही हर सफलता का मन्त्र है.

Thirsty crow

Author - Dilkesh Madhukar

One hot day, a thirsty crow flew all over the fields looking for water. For a long time he could not find any water. He felt very weak and almost lost hope. Suddenly he saw a water jug below a tree. He flew straight down to see if there was any water inside. Yes, he could see some water inside the jug.

The crow tried to push his head into the jug. Sadly, he found that the neck of the jug too narrow. Then he tried to push the jug to tilt it for the water to flow out, but the jug was too heavy.

The crow thought hard for a while. Then looking around, he saw some pebbles. He suddenly had a good idea. He started picking up the pebbles one by one, dropping each into the jug. As more and more pebbles filled the jug, the water level kept rising. Soon it was high enough for the crow to drink. His plan worked.

Moral – With clear thinking and work hard, you may find solution to any problem.

Difficult words: -

Thirsty	प्यासा	hope	उम्मीद
suddenly	अचानक	straight	सीधा
inside	अंदर	Narrow	संकरा
Tilt	झुकाना	heavy	भारी
pebbles	कंकड़	solution	हल
problem	समस्या		

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको कविता कोरी जी की लिखी अधूरी कहानी मछुआरा पूरी करने के लिये दी थी. पिछले अंक में दी गई अधूरी कहानी नीचे दी गई है.

अधूरी कहानी - मछुआरा

लेखिका - कविता कोरी

एक बड़ा जलाशय था. जलाशय में पानी गहरा होता है, इसलिए उसमें काई तथा मछलियों का प्रिय भोजन जलीय सूक्ष्म पौधे उगते हैं. ऐसे स्थान मछलियों को बहुत रास आते हैं. उस जलाशय में भी बहुत-सी मछलियां रहती थी. वह जलाशय दूर से आसानी से नजर नहीं आता था.

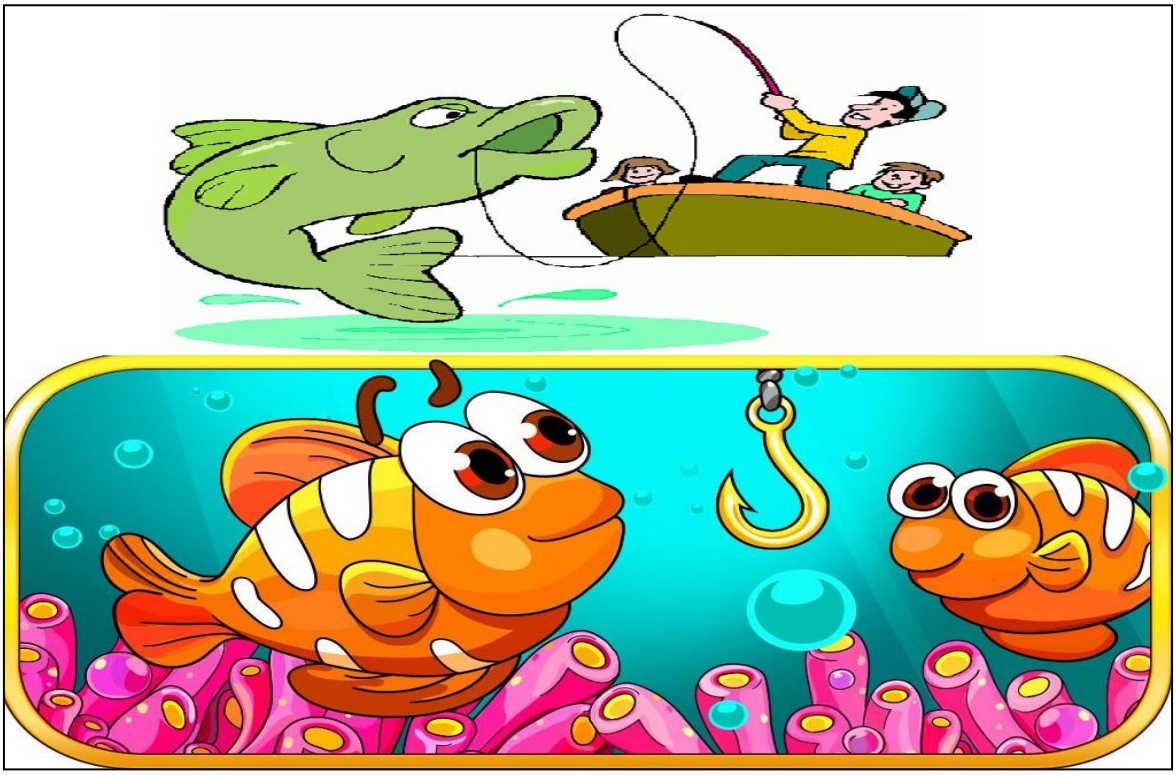

उस तालाब में तीन मछलियां रहती थीं. उनके स्वभाव भिन्न-भिन्न थे. ईना नामक मछली संकट आने के लक्षण मिलते ही संकट टालने का उपाय करने में विश्वास रखती थी. मिना कहती थी कि संकट आने पर ही उससे बचने का यत्न करो. डिका का सोचना था कि संकट को टालने या उससे बचने की बात बेकार है. करने कराने से कुछ नहीं होता. जो किस्मत में लिखा है, वह होकर रहेगा. एक दिन शाम को मछुआरे नदी में मछलियां पकड़ कर घर जा रहे थे. बहुत कम मछलियां उनके जाल में फंसी थीं, अतः उनके चेहरे उदास थे. तभी उन्हें झाडियों के ऊपर मछलीखोर पक्षियों का झुंड जाता दिखाई दिया. सबकी चोंच में मछलियां दबी थीं. उन्होने अनुमान लगाया कि झाडियों के पीछे नदी से जुड़ा जलाशय है, जहां बहुत सी मछलियां पल रही हैं. मछुआरे पुलकित होकर झाडियों में से होकर जलाशय के तट पर आ निकले और ललचाई नजर से मछलियों को देखने लगे. एक मछुआरा बोला अहा! इस जलाशय में तो मछलियां भरी पड़ी हैं। आज तक हमें इसका पता ही नहीं लगा. यहां हमें ढेर सारी मछलियां मिलेंगी - दूसरा बोला. तीसरे ने कहा आज तो शाम घिरने वाली है. कल सुबह ही आकर यहां जाल डालेंगे. इस प्रकार मछुआरे दूसरे दिन का कार्यक्रम तय करके चले गए. तीनों मछलियों ने मछुआरे की बात सुन ली थी.

यह अधूरी कहानी हमें दिलकेश मुधकर जी ने पूरी करके भेजी है. उनकी पूरी की हुई कहानी हम नीचे दे रहे हैं –

<u>दिलकेश मधुकर जी व्दारा पूरी की गई कहानी</u>

मछुवारे के जाने के बाद तीनों मछलियां आपस में बात करने लगीं. ईना ने कहा चलो सुबह होने से पहले यह स्थान छोड़ देते हैं. पर उसकी बात मीना और डिका ने अनसुनी कर दी. तब ईना उस जलाशय को छोड़कर नदी के रास्ते दूर चली गई. जब सुबह मछुवारे जलाशय के किनारे आ गये तब मीना मछली चतुराई से

जलाशय में पड़ी ऊदबिलाव के सड़ी हुई लाश के अंदर घुस गई. जब मछुवारे ने जाल डाला तो मीना और डिका दोनों फंस गए। मछुवारे ने जाल बाहर निकाला तो मीना मरी हुई मछली का अभिनय करने लगी. जब मछुवारे ने उसे उठाया तो उसमें से बहुत बदबू आ रही थी. मछुवारे ने उसे वापस जलाशय में फेंक दिया. पानी में पहुंचते ही मीना झट से गहराई में जाकर छिप गई. इधर डिका ने भाग्यवादी होने के कारण कुछ उपाय नहीं किया और पकड़ा गई. मछुवारे उसे पकड़कर अपने साथ ले गए.

शिक्षा - हमें भाग्यवादी नहीं बल्कि कर्मवादी होना चाहिए.

अगले अंक के लिए अधूरी हम नीचे दे रहे हैं.

बुध्दिमान खरगोश

एक बड़े से जंगल में शेर रहता था. शेर गुस्से का बहुत तेज था. सभी जानवर उससे बहुत डरते थे. वह सभी जानवरों को परेशान करता था. वह आए दिन जंगलों में पशु-पक्षियों का शिकार करता था. शेर की इन हरकतों से सभी जानवर

चिंतित थे. एक दिन जंगल के सभी जानवरों ने एक सम्मेलन रखा. जानवरों ने सोचा शेर की इस रोज-रोज की परेशानी से तो क्यों न हम खुद ही शेर को भोजन ला देते हैं. इससे वह किसी को भी परेशान नहीं करेगा और खुश रहेगा.

सभी जानवरों ने एकसाथ शेर के सामने अपनी बात रखी. इससे शेर बहुत खुश हुआ. उसके बाद शेर ने शिकार करना भी बंद कर दिया. एक दिन शेर को बहुत जोरों से भूख लग रही थी. एक चतुर खरगोश शेर का खाना लाते-लाते रास्ते में ही रुक गया. फिर थोड़ी देर बाद खरगोश शेर के सामने गया. शेर ने दहाड़ते हुए खरगोश से पूछा इतनी देर से क्यों आए? और मेरा खाना कहां है?

चतुर खरगोश बोला, शेरजी रास्ते में ही मुझे दूसरे शेर ने रोक लिया और आपका खाना भी खा गया. शेर बोला इस जंगल का राजा तो मैं हूं यह दूसरा शेर कहां से आ गया.

अब आप इस कहानी को पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें दिलकेश मधुकर जी ने छत्तीसगढ़ी भाषा में कहानी लिखकर भेजी है जिसे हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं -

चतुर बेंदरा

लेखक - दिलकेश मधुकर

एक जंगल म नदियां के तीर म एक ठन जामुन के पेड़ रहय. पेड़ म एक ठन बेंदरा रहय. जेन ह जामुन के पाके पाके गुरतुर फर ल इतरा इतरा के खाथे. लकठा म एक ठन झील म एक ठन मंगरा अउ ओकर सुवारी रहय. मंगरा बहुत आलसी रहय. जेकर सेती ओला एको ठन मछरी नइय मिलय. तुम ओकर सुवारी बहुत नाराज़ रहय.

एक दिन मंगरा ह मछरी खोजत खोजत जामुन पेड़ के तीर आ जाथे. मंगरा उदास रहय तेला देख के बेंदरा ह ओकर हालचाल पूछिस. अउ बहुत कन जामुन के मीठ फर तोड़ के दिस. मंगरा बहुत कन फर ल खाके अउ फर ल अपन सुवारी बर ले जाथे. दोनो झन अब संगी बन जाथे.

मंगरा के सुवारी जामुन के मीठ फर ल खाथे. तव एक दिन ओकर मन म लालच आ जाथे. ओहर बेंदरा ल खाय बर सोचिस. अपन पति ल बेंदरा के करेजा ल लाय बर कथे. तव मंगरा ह अपन संगी ल लाय ले मना करथे. तव पत्नी हठ के आघू हार जाथे. निराश मन ले मंगरा ह बेंदरा ल अपन घर खाय बर बलाथे अउ अपन पीठ म बइठा के ले जात रहय. आधा रद्दा म पहुंच के सब्बो बात ल मंगरा अपन संगी बेंदरा ल बता देथे. तव बेंदरा अपन चतुराई ले कहथे. संगी पहली बताए रहते तव ले आय रहतेव. ओला तो पेड़ म टांग देहे हव. दोनों झन वापिस पेड़ के तीर म आथे. बेंदरा कुद के पेड़ म चढ़ जाथे अउ कहिथे. अरे मुरख भला कोनो अपन करेजा बिना जीये सकथे. मंगरा अपन मुर्खता म रोवत अपन घर चल देथे.

<u>शब्दार्थ</u> -

सुवारी- पत्नी
करेजा- कलेजा
बेंदरा- बंदर
मंगरा- मगरमच्छ
रद्दा- रास्ता
आघू- आगे

अब आप इस चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

मेरा देश

लेखक - ओमप्रकाश वर्मा कक्षा पांचवीं प्रेषक - अजय साहू

उस देश का बच्चा हूं मैं
जिसमें वीरों ने दिए प्राण
उस देश का बच्चा हूं मैं
जिसमें सूरज सबसे पहले आये

उस देश का बच्चा हूं मैं
जिसमें दुश्मन पीठ दिखाकर भागे
उस देश का बच्चा हूं मैं
वीरता जहां बंदूक चलाए

उस देश का बच्चा हूं मैं
जहां सुबह-सुबह चिड़ियां बोलें
उस देश का बच्चा हूं मैं
जहां खेतों में धान लहराए

उस देश का बच्चा हूं मैं
जो जन-गण-मन का राग सुनाए

<u>अभिलाषा</u>

<u>(आल्हा छंद)</u>

लेखिका - स्नेहलता"स्नेह"

कोख मार मत मुझको देना, सुनलो मेरी करुण पुकार|
जीने की अभिलाषा मेरी, कोमल तन पे करो न वार||

बोझ समझते है जो बेटी, जीना उसका है धिक्कार|
बेटी ना हो दुनिया में तो, सूना होगा हर घर व्दार||

बाबा कहे कोख में मारो, माँ तो मेरी है लाचार|
जगत नियंता की रचना मैं, मुझको जीने का अधिकार||

माने ना मैं चीखी फिर भी, भेदे कोमल तन को आज|
शोणित की धारा में बहते, टुकड़े देख न आई लाज||

सारी सृष्टि नीर बहाती,रोते मेघ मूसलाधार|
कांप उठा देवों का मन भी, देख क्रूर ये अत्याचार||

ऐसे निरमोही मानव पर, आन गिरो ना बिजली आज|
पश्चाताप कर ले मूरख, समय अभी भी तेरे पास||

काज महान है जीवन रक्षा, बेटी बेटा दोनो ताज|
जीवन गाड़ी के दो पहिये, बस इतना समझो तुम राज||

बेटी बिन जीवन है सूना, करना इस पर सभी विचार|
करना रक्षा बेटी की तुम, बेटी जीवन का आधार||

अभिलाषा बेटी की इतनी, मांगे प्यारा सा संसार|
बेला, चंपा, और चमेली, इसे बना लो तुम गलहार||

गरम जलेबी

लेखक - द्रोण साहू

किसे बताऊँ,
कहाँ मैं जाऊँ?
गरम जलेबी,
कैसे पाऊँ?

कैसे करके,
उसको खाऊँ?
कैसे कोई,
जुगत लगाऊँ?

मम्मी को मैं,
कैसे मनाऊँ?

घंटी वाली गुड़िया

लेखिका - अंजूलता भास्कर

घंटी वाली प्यारी गुड़िया |
नन्ही मुन्नी प्यारी गुड़िया ||

रोज़ सुबह वह उठ जाती |
घंटी बजाकर मुझे जगाती ||

देखो देखो सुबह हो गई |
सूरज के साथ धूप खिल गई ||

रानी दीदी अब उठ जाओ |
जल्दी तैयार हो स्कूल जाओ ||

बचपन

लेखिका - कनकलता गहलोत

बचपन की जब याद सताए,

आंखें नम हो जाती हैं ।

मेरे प्यारे बचपन तेरी,

याद हमेशा आती है ।

बाबूजी की वह मार,

फिर दादा-दादी का प्यार,

दीदी का चोटी खींचना,

रोने पर मां की पुचकार ।

बहुत ढूंढ़ती हूं उसको पर,

नज़र नहीं वह आता है ।

रहती कीचड़ से सनी हुई,

पंछी सी उड़ती फिरती थी,

शत्रु नहीं थे मेरे कोई,

सबसे प्यार से मिलती थी ।

मां की ममता का वह आंचल,

कहीं नही मिल पाता है ।

बचपन की सब बातें मुझको,

याद हमेशा आती हैं,

उनकी याद करूं तो मेरी,

आंखें नम हो जाती हैं ।

बाबा हलपट

लेखक - दीपक कंवर

बूढ़ा बाबा हलपट

चले वह लटपट

हमे सिखाये सटपट

काम करो झटपट

बात करो पटपट

दौड़ो कूदो सरपट

पढ़ो लिखो फटाफट

मत करो खटपट

अच्छों से न कटमट

झूठों से कहो चलहट

बाबा की खटपट

आदत से नटखट

खाना खाते चटपट

पानी पीते गटगट

करते रहते चटचट

जहां भी हो जमघट

खेत हो या पनघट

वहां बाबा हलपट

बिल्ली और बंदर

लेखक - सुबोध कुमार फ्रेंकलिन (आशिक रायपुरी)

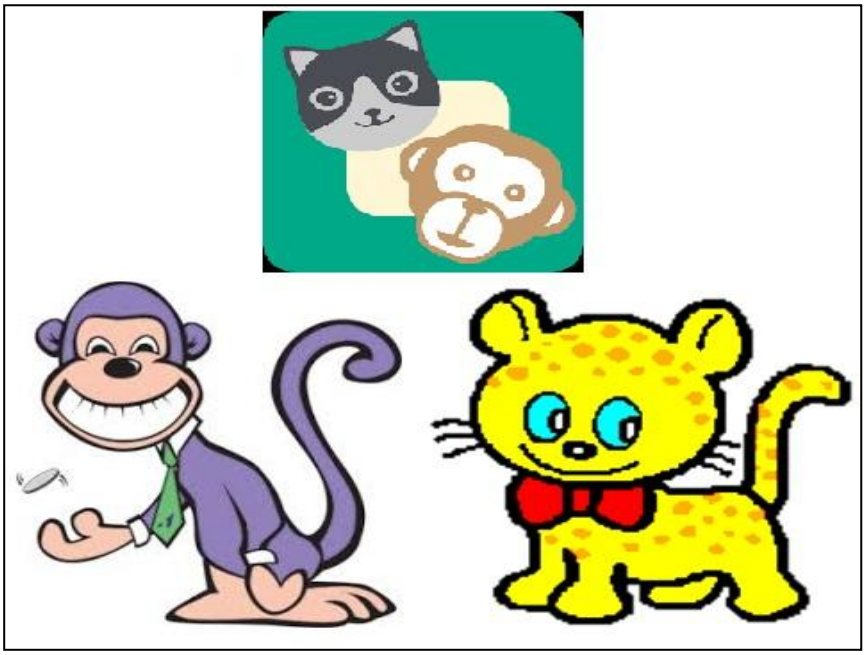

एक थी बिल्ली, एक था बंदर,

दोनो ही थे मस्त कलंदर ।

बोली बिल्ली फिर बंदर को,

सैर करेंगे चलो शहर को ।

लगा उसे जब पैर मे कांटा,

बिल्ली ने बंदर को डांटा ।

रस्ते में फिर मिल गया आटा,

उसका किया बंदर बांटा ।

बंदर ने फिर मौका छांटा,

बिल्ली को मारा फिर चांटा ।

बिल्ली उससे डरकर भागी,

फूटी किस्मत फिर ना जागी ।

रोते-रोते घर को आई,

घर में उसने रोटी खाई ।

कान पकड़ कर फिर वह बोली,

गांठ अकल की अपनी खोली ।

बदमाशों से काम लगाना,

देखो सब कुछ पड़ा गंवाना ।

मेरे गाँव में

लेखक - टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

मेरे स्वच्छ -- निर्मल गाँव में
वाह ! कितनी सुंदर बहार है

ग्राम -- पंचायत के सामने
एक चौपाल सजता है
नहीं दिखती कहीं गंदगी
बड़ा सुंदर दृश्य लगता है
पलस्तर की हुई है गलियाँ
चिकनी सड़कें कोलतार की है
वाह ! कितनी सुंदर बहार है

स्वच्छ पानी से लबालब
निर्मलघाट वाला एक ताल है
गाँव को छूती नदी बहती
अमराई बड़ी बेमिसाल है
पश्चिम में लगता हाट
पूरब में स्वागत -- व्दार है
वाह ! कितनी सुंदर बहार है

स्वास्थ्य केन्द्र के पास
एक और भवन निराला है
जहाँ मैंने क ख ग सीखी
वो मेरी अद्भुत पाठशाला है
तरह -- तरह के पेड़ - पौधे
जैसे यहाँ तोरण - व्दार है
वाह ! कितनी सुंदर बहार है

स्वच्छ और पक्के शौचालय
बने हुए हैं घर - घर
सूखे गीले कचरे के डिब्बे
रखे हुए हैं घर - घर
उजले पावन आँगन में
जहाँ एक तुलसीडार है
वाह ! कितनी सुंदर बहार है

फल फूल छायेदार पेड़ों से
मेरे गाँव के हर बाट है
हर शख्स यूँ कहता है
वाह ! क्या निराला ठाट है
हर चेहरे पर है मुस्कान
जैसे निस दिन त्योहार है
वाह ! कितनी सुंदर बहार है

मैं मुरली की धुन हुँ

लेखक -अरविन्द वैष्णव

मैं विद्यार्थी हुँ मुझे पढ़ा दीजिए ।

मुरली की धुन हुँ गुनगुना लीजिए ।।

मैं प्राण प्रण से हुँ वतन के लिए ।

शहीदो की शहादत समझा दीजिए ।।

विवेकानंद को पढ़ा और पढ़ा बुध्द को ।

तिरंगे की गाथा सुना दीजिए ।।

जिनकी नज़रें बुरी हैं वतन पर ।

उनका तो नामो निशां मिटा दीजिये।।

बेटियों पर रखते हैं जो नजरें बुरी ।

उन हैवानो को मिलकर सजा दीजिये ।।

ये अरविन्द विश्वास की डोर चाहता है ।

अमन का चमन यहां ला दीजिए ।।

वरदान

लेखिका - जागृति मिश्रा "रानी"

जग को तुम वरदान हो बेटी,

तुम मेरा अभिमान हो बेटी ।

निर्मल कोमल सहज-सरल भी,

सुंदर चतुर सुजान हो बेटी ।

तुम ही सीता, तुम सावित्री,

दो-दो कुल का मान हो बेटी ।

पवित्रता की प्यारी मूरत,

गीता और कुरान हो बेटी ।

बिखरा देती हो तुम खुशबू,

बगिया की मुस्कान हो बेटी ।

जिसको सुनकर सब खुश होते,

एक सुरीली गान हो बेटी।

झांसी की रानी जैसी तुम,

पूरा हिंदुस्तान हो बेटी ।

फूलो-फलो नित खूब बढ़ो तुम,

'रानी' कहे भारत की शान हो बेटी ।

वर्षा के पल

लेखिका - अंजूलता भास्कर

कितने सुंदर वह पल होते

जब बारिश में भीगे होते

सर - सर कर के हवा है चलती

गड़ -गड़ कर बिजली है चमकती

रिम झिम रिम झिम बरसा पानी

छम - छम नाचे गुड़िया सयानी

मैं-तुम, तुम-मैं साथ में होते

वर्षा में जब भीगे होते

<u>विद्यालय</u>

लेखिका - श्वेता तिवारी

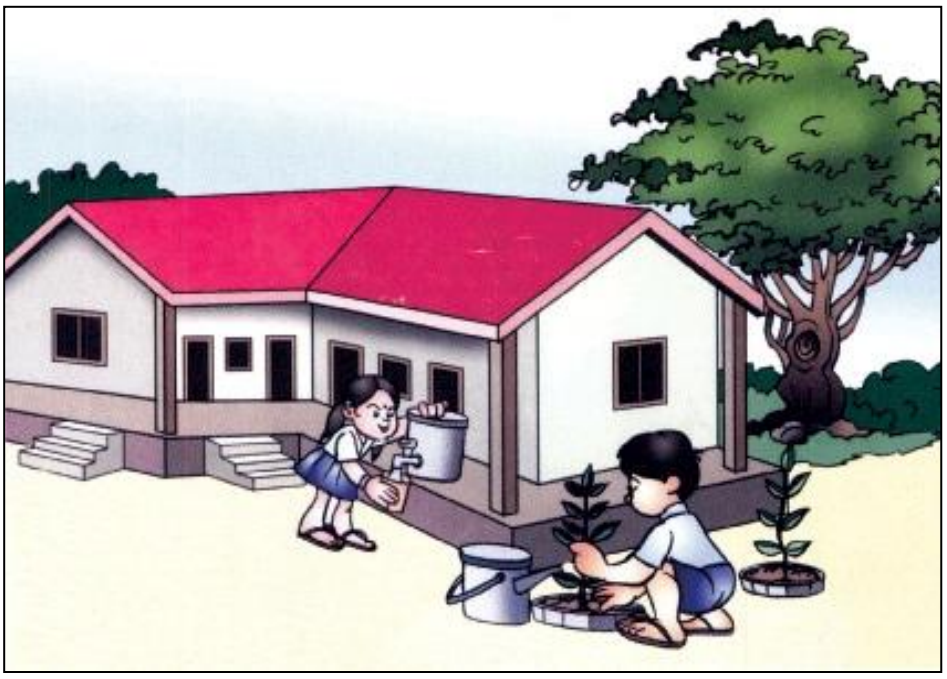

छोटा सा विद्यालय हमारा

खेले इसमे बहुत से खेल

पढ़ें लिखें हम साथ-साथ मे

भोजन खायें बाँट-बाँट के ।।

रंग बिरंगी इसमें पुस्तक

किस्से और कहानी

गणित और विज्ञान का मेला

गतिविधियां नई-पुरानी ।।

नई नई शिक्षा मिलती है

आगे बढ़ते जाना है

बाल सदन की बैठक होती

मन की बात बताना है ।।

नवाचार करके दिखलाते

शून्य निवेश से मन बहलाते

कबाड़ से जुगाड़ करके

नित्य नये समान बनाते ।।

खेल खेल में मिलती शिक्षा

इसका करते हैं सम्मान

यह है हम सबका परिवार

यह हम सबका है मान ।।

सदाचार

लेखक - नेमीचंद साहू

आओ बच्चों तुम्हे बताएं

सदाचार की बातें

कभी न भूलो ईश्वर

को दिन हो या हों रातें

कभी सताओ जीवों को मत

सीखो सदा दया का पाठ

मदद करो सेवा करो

रखना इसको हरदम याद

सफलता की राह

लेखक - अनकेश्वर प्रसाद महिपाल

किसी नये काम का, आगाज करके देखो,

कल जो करना है, उसे आज करके देखो.....

कर्म अच्छे करने पर, साथी कई मिल जाते हैं,

कम से कम एक बार, आवाज करके देखो.....

लक्ष्य स्थिर रख कर, बढ़ो मंजिल की ओर,

काम करने का नया, अंदाज करके देखो.....

महत्व नहीं होता कोई, लकीर पीटने वालों की,

सुधार की खातिर नया, काज करके देखो.....

पग चूमेगी सफलता, यदि खुद पर विश्वास है,

आत्मविश्वास पर अपने, नाज करके देखो .....

बंधे रहोगे कब तलक, गुलामी की बेड़ियों में,

उन्मुक्त गगन में, परवाज करके देखो.....

हां में हां सदा, न मिलाते ही रहना,

मार्ग यदि बुरा हो तो, एतराज करके देखो.....

बिठाएगा सर आंखों पर, जहान सारा,

दिलों में सबके, राज करके देखो.....

सब्ज़ियां

लेखक - अजय कुमार कोशले

ताजा आलू ताजा भाटा

खाओ हर दम ताजा-ताजा

लाल मिर्च और लाल टमाटर

ले लो ताजे हरे मटर

लम्बी ककड़ी, कद्दू मोटा

बड़ा कचालू, कुंदरू छोटा

भिण्डी की तो बात निराली

इसे पकाती प्यारी रानी

<u>छत्तीसगढ़ी बालगीत - हमर इसकूल</u>

लेखक - बलराम नेताम

बढ़ सुघ्घर हे संगी हमर इसकूल

जिहाँ खिले हाबे रंग बिरंग के फूल

बढ़ सुघ्घर हे संगी हमर इसकूल।।

हमर स्कूल के यह कहानी हे,

बढ़ गुरतुर गुरुजी के बानी हे,

शिक्षक दिवस मा गुरुजी ल देथन फूल,

बढ़ सुघ्घर हे संगी हमर इसकूल।।

स्कूल में जाके करथन पढ़ाई

नई करन ककरो सन लड़ाई,

हमर कक्षा में ना हे कचरा अव धूल,

बढ़ सुघ्घर हे संगी हमर इसकूल।।

पर्याबरण पर लगाए हावन करंज अऊ आम

स्वच्छता की कथरन संगी जम्मो काम,

इसकूल मा लगे हाबे गोंदा के फूल,

बढ़ सुघ्घर हे संगी हमर इसकूल||

कापी पीने ला हथियार बनबो,

बड़े होके अब्बड़ नाम कमाबो,

पढ़ई लिखई मा नयई करन कोनो भूल,

बढ़ सुघ्घर हे संगी, हमर इसकूल।।

गुरुजी पढ़ाथे, अउ समझाथे,

जम्मो जिनिस ला, सही बताथे,

खेल खेल मा खेलाथे, झूलना के झूल,

बढ़ सुघ्घर हे संगी, हमर इसकूल।।

छत्तीसगढ़ी बालगीत - मोर छत्तीसगढ़ के धरती

लेखिका - स्नेहलता "स्नेह"

मोर छत्तीसगढ़ के धरती हे धान के कटोरा

धान के कटोरा, शान के कटोरा रे वरदान के कटोरा

ईब नदी सोना उपलै, अउ अरपा गीत सुनावे

महानदी छत्तीसगढ़ के जीवन धारा कहिलावे

हसदो इंद्रावती मांड वरदान के कटोरा

मोर छत्तीसगढ़ के भुईयां हे धान के कटोरा

राजीव लोचन छत्तीसगढ़ के प्रयाग कहिलाथे

ठिनठिन पखना छत्तीसगढ़ के महिमा गाथा गाथे

सिहावा,मतीरिंगा पाट वरदान के कटोरा

सरहुल करमा के तिहार लइका सियान ला भाथे

दादा मांदर के तान तिक धिन्ना धिन बजाथे

इहां भाखा बोली हे जयगान के कटोरा

मोर छत्तीसगढ़ के भुईया हे धान के कटोरा

Rain Rain Go Away

Rain-Rain go away

Come again another day

Rain-Rain go away

Little children want to play

Sun-Sun out you stay

Warm us up for all the day

Little children want to play

Warm us up for all the day

<u>सामान्य ज्ञान - स्वच्छता अभियान पर शपथ ग्रहण</u>

लेखिका कु. मर्यादा सोनी

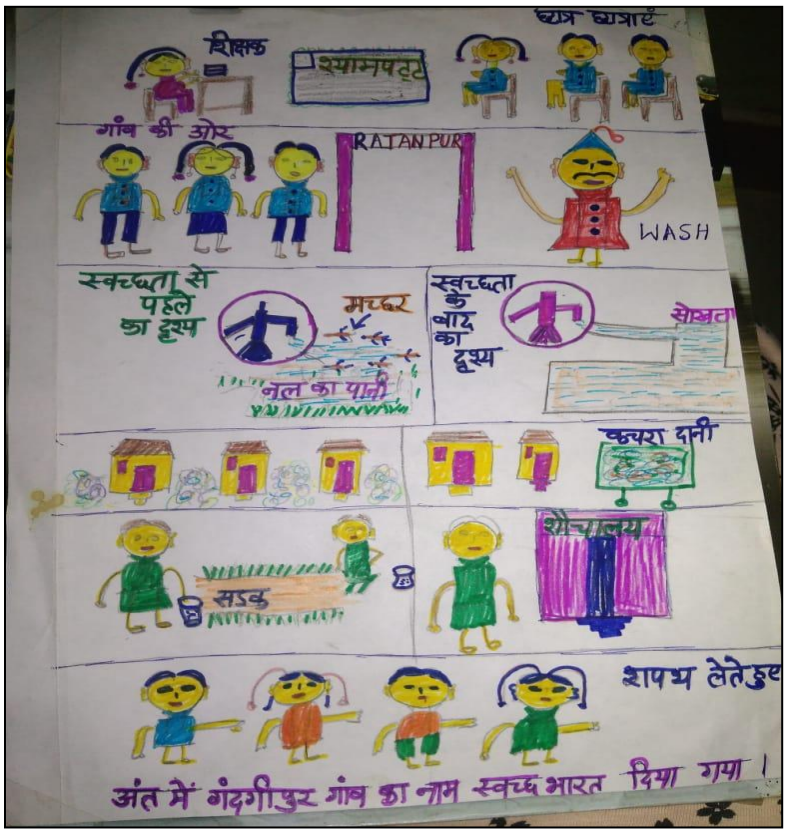

रतनपुर के स्कूल में आसपास गांव के बच्चे पढ़ने आते थे. उसमे से एक गांव गंदगीपुर के बच्चों की उपस्थिति धीरे - धीरे कम होने लगी. शिक्षक ने जानकारी ली तो पता चला कि वहाँ के बच्चें डेंगु, मलेरिया, खुजली और उल्टी दस्त से पीड़ित होने के कारण स्कूल नहीं आ रहे थे. वहाँ के गांव-गली घर में गंदगी बहुत ज्यादा थी. तब शिक्षक ने कुछ उपस्थित बच्चों को स्वच्छता के फायदे और नुकसान बताये. बच्चे स्कूल से घर लौटकर गांव आये तो उन्हे खुले मे शौच करते लोग मिले. गंदे पानी का गली में जमाव मिला और घर के आसपास कचरा मिला. बच्चों ने गांव के सभी लोगो को गंदगी से होने वाले बीमारी एवं नुकसान के बारे में बताया गया एवं स्वच्छता के बारे में जागरूक कराया. सभी ने गांव एवं घर को स्वच्छ रखने की शपथ ली.

<u>सामान्य ज्ञान - सफाई और ज़रूरी बातें</u>

लेखक - हरीश चंद्र जायसवाल

<u>कौशल</u>- समस्या पहचानना, विकल्प सुझाना और निर्णय लेना ।

<u>गतिविधि</u>- इस गतिविधि को करवाने के पूर्व शिक्षक स्वच्छता एवं स्वास्थ्य तथा नैतिक गुणों से संबंधित कुछ बातों को एक -एक चिट पर लिखें जैसे-

1. कचरा कूड़ेदान में फेंकना.
2. कान, नाक में उंगली डालना.
3. यहां -वहां थूकना.
4. बढ़े हुए नाखूनों को काटना.

5. खाना खाने से पूर्व हाथ धोना.
6. अपने आसपास के स्थान को स्वच्छ रखना.
7. माता पिता की आज्ञा का पालन करना.
8. पौधों को पानी देना.
9. आपस में लड़ाई न करना.
10. दांत साफ करना.

चित्र के अनुसार कई चिट बनाकर एक बॉक्स में रखें. प्रत्येक बच्चे को एक चिट उठाने को कहें तथा ध्यान से पढ़ कर जो कार्य सही है उन्हें तिजोरी में डालने तथा गलत कार्य की चिट को कूड़ेदान में डालने को कहें. इसके लिए 2 बॉक्स बनाएं जिनमें एक तिजोरी के समान हो और दूसरा कूड़ेदान के समान हो.

जब बच्चा चिट डालते समय तिजोरी या कूड़ेदान का प्रयोग करे तब उनसे यह भी पूछें कि उसे उसने तिजोरी या कूड़ेदान में चिट को क्यों डाला है.

कला - फैंसी ड्रेस

प्रस्तुतकर्ता - श्रीमती विभा सोनी

बच्चों को अपने देश की कला और संस्कृति के बारे में समझाने का एक तरीका फैंसी ड्रेस भी हो सकता है. इसमें बच्चों को मेकअप और परिधान के माध्यम से किसी जाने-माने और महत्वपूर्ण व्यक्ति का अभिनय करने को कहा जाता है. इससे बच्चे उस महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तित्व के सभी पहलुओं को खेल खेल में समझ सकते हैं. स्कूल में इसे प्रतियोगिता के रूप में भी कराया जा सकता है.

नवरात्री के अवसर पर श्रीमति विभा सोनी के व्दारा शाला मे फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य बच्चों को अपनी सन्स्कृति के बारे मे अवगत कराना साथ ही साथ बच्चों की कला को सबके सामने उजागर करना है. इस प्रतियोगिता के माध्यम से बच्चों ने श्री राम, लक्षमण, दुर्गा माँ,सीता,हनुमान,साई राम, दैत्य,व अन्य रूपों की झांकी प्रस्तुत की.

कबाड़ से जुगाड़ - फ्लैश कार्ड

लेखिका - श्रीमती नंदिनी राजपूत

<u>उद्देश्य</u>- शून्य निवेश पर सहायक शिक्षण सामग्री तैयार करना.

<u>आवश्यक सामग्री</u>- पुराने मोटे कागज के पुट्ठे,कलर टेप,स्केच पेन,नये- पुराने फ्लेश कार्ड, तार आदि.

<u>कैसे तैयार करें</u>- पुट्ठे को आवश्यकतानुसार काटकर गोंद या टेप से चिपका देना है. चारों ओर कलर टेप लगा देना होगा. चित्रानुसार तार के छोटे-छोटे गोले बाक्स में लगा देना होगा. इन्हीं गोले में फ्लैश कार्ड को लगा देना होगा.

<u>गतिविधि</u>- उद्देश्य प्राप्ति के लिए विषयानुसार अलग-अलग सहायक शिक्षण सामग्री तैयार करना होगा. इन कार्डों के व्दारा समानार्थी शब्द, विलोम शब्द, स्थानीय मान की समझ, अंग्रेजी वाक्य बनाना,पशु पक्षी फल फूल आदि की समझ और अर्थ जानने के लिए कार्ड के द्वारा बच्चों की समझ की जांच की जा सकती है. बच्चें कार्ड देखकर सही उत्तर बताते हैं.

<u>महत्व</u>- शून्य निवेश या कम लागत में सहायक शिक्षण सामग्री तैयार किया जा सकता है. खेल खेल में बच्चें गतिविधियां करते हैं जिससे अवधारणा की समय स्थायी होता है.

कबाड़ से जुगाड़ - आओ शब्द बनाएं

लेखक - जितेन्द्र कुमार पंत

उद्देश्य - अंको को जोड़कर शब्द बनाना.

आवश्यक सामग्री -पुराने चार्ट पेपर, कार्ड बोर्ड, आइसक्रीम स्टिक, स्केच पेन आदि.

<u>कैसे बनाएं</u>- चित्रानुसार फ्लैश बोर्ड बनाने के लिए कार्ड बोर्ड को काटकर बीच में कार्ड लगाने के लिए जगह छोड़ना है. फ्लैश कार्ड बनाने के लिए पुराने चार्ट पेपर से वर्णों को अलग अलग काट कर पुट्ठे पर चिपका देना है और उसमें एक आइसक्रीम स्टिक लगा देना.

<u>गतिविधि</u>- फ्लैश कार्ड को जितने वर्णों वाला शब्द है चयन कर बोर्ड में लगाना है. फिर सार्थक या निरर्थक शब्द तैयार कर बच्चों से अभ्यास कराया जाता है.
<u>लाभ</u>- खेल खेल में बच्चें गतिविधियां करते हैं। जिससे प्राप्त ज्ञान स्थायी होता है. सार्थक और निरर्थक शब्दों की पहचान होती है.

कला - कागज से बने कपड़े

लेखिका - अंजूलता भास्कर

आप कक्षा में बच्चों को कागज़ से विभिन्न प्रकार के कपड़े बनाना सिखा सकते हैं. इन कपड़ों का उपयोग बच्चे अपनी गुड़िया और अन्य खिलौनों के लिए कर सकते हैं.

सामान्य ज्ञान - नक्शे की समझ

लेखिका - श्रीमती सुभद्रा जगत

उद्देश्य- बच्चों को नक्शे की आकृति से परिचित कराना.

सामग्री- गत्ता, कैंची, रंग ,स्केच पेन, कार्बन पेपर.

गतिविधि -नक्शे के टुकड़ों को जमा कर नक्शा बनाना है.

लाभ -

1. गतिविधि के व्दारा बच्चों में रूचि उत्पन्न होगी.
2. टी एल एम के व्दारा नक्शे की समझ विकसित होगी.
3. सभी जिलों के नाम एवं नक्शे में उनका स्थान याद रख पाने में मदद मिलेगी.
4. नक्शा निर्माण के प्रति बच्चों में रूचि उत्पन्न होगी.

कला - मनोरम सिन्हा के बनाए चित्र

यहां हम कक्षा 6 वीं में पढने वाले विवेकानंद विद्यालय डौण्डी जिला बालोद (छतीसगढ़) के बनाए चित्र प्रकाशित कर रहे हें जिन्हें टिकेश्वर सिन्हा जी ने भेजा है.

विज्ञान के खेल

लेखिका - अनामिका पाण्डेय

कोशिका से उत्तक, अंग, अंग प्रणालियां और फिर पूरा शरीर कैसे बनता है उसकी तुलना, व्यक्ति, परिवार, समुदाय और पर्यावरण से करके बच्चों को चित्र व्दारा सिखाने का बहुत सुंदर खेल अनामिका जी ने भेजा है. उनका चित्र नीचे प्रकाशित है -

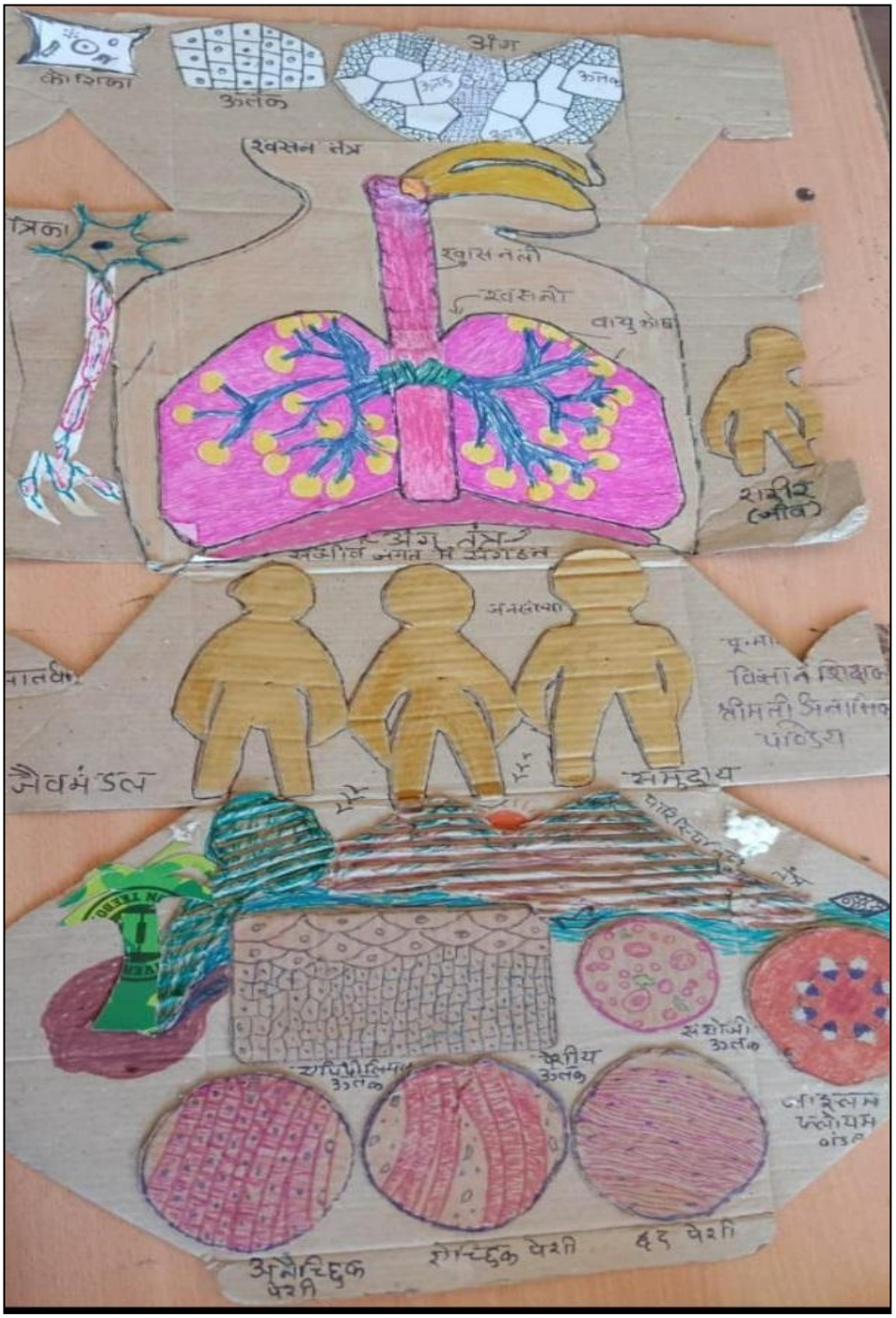

आओ हंस लें

चंकी (टीचर से) – मैम , अगर आपका आशीर्वाद मिल जाये तो मैं अच्छे नंबर से पास हो जाऊँगा.
टीचर – हाँ - हाँ, पर तुमने तैयारी तो ठीक से की है ना ?
चंकी – तैयारी ही ठीक से की होती तो आपके पास आशीर्वाद मांगने क्यों आता ?

चंकी (स्टेशनरी दुकान पर) – प्रिंटर के लिए पेपर दे दो.
दुकानदार – A 4 ?
चंकी – एप्पल ! अब जल्दी पेपर दे दो.

टीटू – सर , लोग हिंदी या इंग्लिश में ही क्यों बोलते है ? मैथ्स में क्यों नहीं ?
टीचर – ज्यादा 3 -5 मत करो , 9 -2 -11 हो जाओ. नहीं तो 5 -7 खींच कर दूंगा तो 6 के 36 नजर आएंगे और 32 के 32 बाहर निकल आएंगे.
टीटू – बस सर....समझ गया , हिंदी इंग्लिश ही ठीक है, मैथ्स की भाषा तो बड़ी खौफनाक है.

टीचर – टीटू बताओ वो कौनसा पक्षी होता है, जिसके पंख तो होते हैं लेकिन वह उड़ नहीं सकता.
टीटू – सर, मरा हुआ पक्षी.

अध्यापक – टीटू , स्वर और व्यंजन में फर्क बताओ ?
टीटू – सर , स्वर मुंह से बाहर निकलते हैं और व्यंजन मुँह के अंदर जाते हैं.

पहेलियां - देशभक्तों के नाम बताओ

(1)

बचपन से ही जिनके मन में,

क्रांति जन्म लेती है।

आदेशित कुछ करने को ज्यों,

भारत मां करती हैं।।

खेतों में बंदूकें बोते,

चट से बोल पड़े थे।

अंग्रेजों ने फांसी दी तो,

हंसते हुए चढ़े थे।।

(2)

लोहा लेना अंग्रेजों से,

बिना हिचक स्वीकारा।

झांसी की रक्षा में जिसको,

जीवन लगा न प्यारा।।

वीर वेष धारण कर निकली,

कौन रही वह रानी।

जिसकी अंतिम रक्त बूंद ने,

हार न मन में मानी।।

(3)

वेष संत का भ्रमण निरंतर,

सहज-सरल-उपकारी।

निर्धन नारायण की पूजा,

ऐसे अतुल पुजारी।।

गांधीजी का साथ निभाया,

गुणी और भूदानी।

उनका नाम बताओ बच्चो,

जाने तुमको ज्ञानी।।

सही उत्तर : 1. भगतसिंह, 2. रानी लक्ष्मीबाई, 3. विनोबा भावे

भाखा जनउला - वर्ग पहेली

रचनाकार - दीपक कंवर

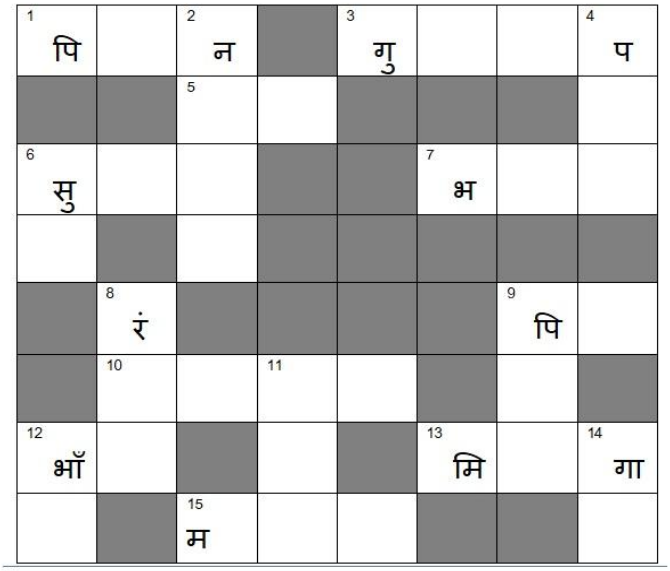

बाएं से दाएं:- 1 आटा, 2 पानी पूरी, 5 भारी, 6 पत्नी, 7 भालू, 9 जानवर का बच्चा, 10 खूब खाने वाला, 12 बैगन, 13 हिरण, 15 स्नेही/प्रेमी

ऊपर से नीचे:- 2 हल चलाने वाला, 4 कबूतर, 6 तोता, 8 एक झूले का नाम, 9 पीला रंग, 11 रात, 12 जीजा, 14 भैसा/बैल गाड़ी

उत्तर

1 पि	सा	2 न		3 गु	प	चु	4 प
		5 ग	रु				रें
6 सु	आ	री			7 भ	लु	वा
आ		या					
	8 रं					9 पि	ला
	10 ह	द	11 र	हा		य	
12 भां	टा		थि		13 मि	र	14 गा
टो		15 म	या	रु			ड़ा